Page No

विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

अतिप्रयत्न विधृतापि परमेश्वरगृहेषु विविध-गन्धगजगण्ड मधुपान मत्तेव परिस्खलति । पारुष्य-मिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति ।

अर्थ- (अतिप्रयत्न विधृतापि परमेश्वरगृहेषु) बड़े राजाओं (या धनियों) के घरों में अत्यन्त प्रयत्न से रक्खी गई भी यह मानो (विविधगन्धगज-गण्ड मधुपानमत्तेव परिस्खलति) अनेक गन्धगजों के गण्डस्थलों के मधुपान से मत्त हुई लड़ख-ड़ाती रहती है। (पारुष्य मिवोपशिक्षितु मसिधारा-सु निवसति) मानो क्रूरता सीखने के लिए तलवारों की धारों में निवास करती है।

टिप्पणी -

मद्यपान से मत्त व्यक्ति कसकर पकड़ा जाता हुआ भी बार-बार गिर पड़ता है। लक्ष्मी भी बड़े बड़े राजाओं व रईसों के महलों में बहुत प्रयत्नपूर्वक रखी जाने पर भी फिसल कर अन्य राजा या रईस को प्राप्त हो जाती है। अतः कवि की उत्प्रेक्षा है कि उन राजाओं के हाथियों के गण्डस्थलों से चूते हुए मदजल के पान से मानो नशे में चूर होकर ही वह स्खलित हो जाती है। 'मधु' शब्द मदजल और मद्य अर्थों में श्लिष्ट है। इस प्रकार मदजल और मद्य में

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." - Rabindranath Tagore

IND CamScanner App

वस्तुतः भेद होने पर भी मधु शब्द के श्लेष से 'अभेदाध्यवसाना अतिशयोक्ति' अलंकार है। इसका विग्रह इस प्रकार करेंगे- 'मधूनि मदजलान्येव मधूनि मद्यानि'। 'मधुपानमत्तेव' में लक्ष्मी के परिस्खलन का हेतु उत्प्रेक्षित है, अतः 'हेतूत्प्रेक्षा' अलंकार हुआ। इस प्रकार इस वाक्य में उक्त अलंकारों का 'संकर' है। निष्ठुरता सीखने के लिए ही यह लक्ष्मी मानो तलवार की धार में बसती है। शत्रु की तलवार के शिकार बने चिरसेवित अपने मालिक को भी निर्दयतापूर्वक प्राप्त नहीं होती।

यहाँ भी 'कठिनता' और 'निर्दयता' अर्थों में 'पारुष्य' शब्द श्लिष्ट है - 'पारुष्यं निर्दयत्वम्'। वस्तुतः कठिनता और निर्दयता में भेद होने पर भी पारुष्य शब्द के श्लेष द्वारा अभेद के अध्यवसान होने से 'अतिशयोक्ति' अलंकार है तथा 'उपशिक्षितुमिव' में 'क्रियोत्प्रेक्षा' अलंकार है। दोनों के परस्पर आश्रित होने से 'सङ्कर' अलंकार हुआ।

पदव्याख्या - अतिप्रयत्नविधृता - अतिशयः प्रयत्नः अतिप्रयत्नः (क०धा०) अतिप्रयत्नेन विधृता (तृ०तत्पु०) (परमेश्वर्यहेषु - परमश्चासौ ईश्वरश्च (क०धा०) परमेश्वराणां गृहाणि (ष० तत्पु०) तेषु। विविधगन्धगजगण्ड मधुपानमत्त- गन्धाश्च ते गजाश्च गन्धगजाः (क०धा०) विविधाः गन्धगजा विविधगन्धगजाः (क०धा०) तेषां गण्डा विविधगन्धगजगण्डाः (ष० तत्पु०)

IND CamScanner App

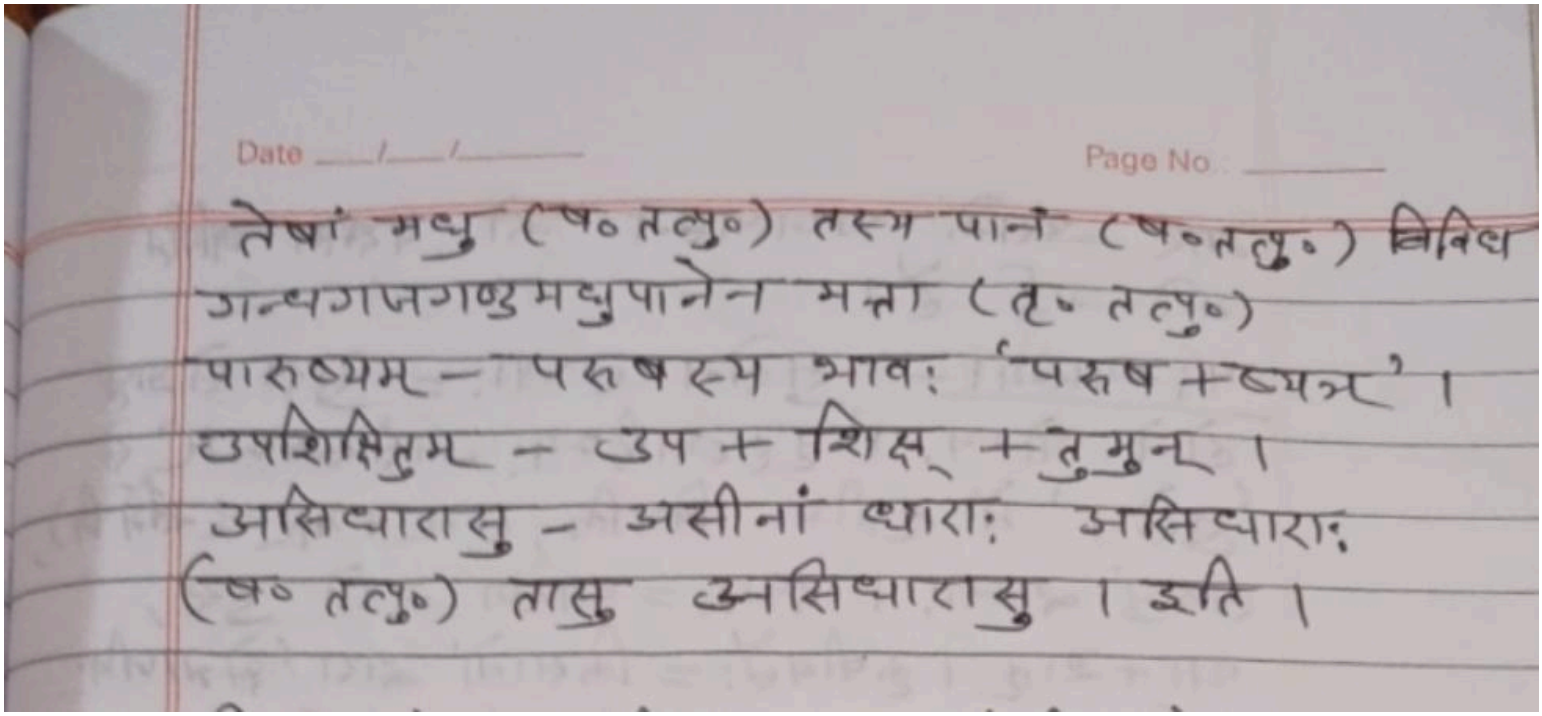

Date __/__/____ Page No. ____

तेषां मधु (ष० तत्पु०) तस्य पानं (ष० तत्पु०) विविध गन्धगजगण्डमधुपानेन मत्ता (तृ० तत्पु०)

पारुष्यम् – परुषस्य भावः 'परुष + ष्यञ्' ।

उपशिक्षितुम् – उप + शिक्ष् + तुमुन् ।

असिधारासु – असीनां धाराः असिधाराः (ष० तत्पु०) तासु असिधारासु । इति ।

IND CamScanner App